

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला— ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

कृषि श्रमिकों की कमी के मद्देनजर धान की सीधी बुवाई का विकल्प दिया वैज्ञानिकों ने

पंतनगर। 26 मई 2020। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के सस्य विज्ञान विभाग के वैज्ञानिकों ने किसानों को धान की सीधी बुवाई की तकनीक अपनाने की सलाह दी है। श्रमिकों के पलायन करने के कारण उनके अभाव में धान की रोपाई किसानों के लिए चिन्ता का विषय बनी हुई है। ऐसे में वैज्ञानिकों ने कम श्रमिक व कम पानी के उपयोग से सीडड्रिल द्वारा धान की सीधी बुवाई करने को कहा है। सस्य वैज्ञानिक डा. वीरेन्द्र प्रताप सिंह ने बताया कि सीडड्रिल द्वारा धान की सीधी बुवाई करने से न तो नर्सरी की आवश्यकता तथा ना कदेड़ व रोपाई की आवश्यकता होती है। इस विधि में गेहूं की तरह ही खेत तैयार कर कुछ ही समय में बड़े प्रक्षेत्र की बुवाई सम्पन्न की जा सकती है। यही नहीं सीधी बुवाई करने से 25 से 30 प्रतिशत कम पानी का भी उपयोग होता है। कम श्रमिक, कम डीजल, एवं कम पानी के साथ अच्छा उत्पादन प्राप्त हो जाता है।

डा. सिंह ने बताया कि यदि अच्छी प्रकार से धान की खेती सीधी बुवाई विधि वैज्ञानिक तौर तरीकों से की जाती है तो 3-5 प्रतिशत ज्यादा उपज भी प्राप्त होती है। यही नहीं इस तकनीक के द्वारा धान की फसल भी 8-10 दिन पहले ही परिपक्व हो जाती है और रबी फसल की समय से बुवाई कर अच्छा उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।

डा. सिंह ने बताया कि धान की सीधी बुवाई की सफलता के लिए खेत समतल होना चाहिए ताकि सीडड्रिल समान रूप से बीज एवं खाद गिराए व खेत की सतह पर पानी सामान रूप से वितरित हो। धान की बुवाई जून के मध्य में करनी चाहिए, ताकि वर्षा प्रारम्भ होने तक पौधा पूर्णतः स्थापित हो जाए। अच्छे जमाव के लिए भूमि में पर्याप्त नमी का होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि बीज 2-3 सेमी गहराई पर ही बोना चाहिए क्योंकि अधिक गहराई से जमाव कम होता है। उन्होंने बुवाई के तुरन्त बाद या 2-3 दिन के अन्दर जब खेत में नमी अच्छी हो, खरपतवारों के बीजों के जमाव से पूर्व भूमि सतह पर खरपतवारनाशी का छिड़काव करने की भी सलाह दी। डा. सिंह के अनुसार यदि खेत में चौड़ी पत्ती व मोथा वर्गीय एवं अन्य घास कुल के खरपतवार उग आये तो बुवाई के 3-5 पत्ती की अवस्था पर उन शाकनाशियों का प्रयोग करें जो सभी प्रकार के खरपतवारों को समूल नष्ट कर सकें। उन्होंने यह भी बताया कि यदि जमाव समान न हो व खेत में खाली जगह हो तो 3-4 सप्ताह बाद सिंचाई या वर्षा के बाद उसी खेत से कुछ पौधे उखाड़कर रिक्त स्थानों पर रोपाई कर देनी चाहिए। जिंक की कमी के लक्षण दिखाई देने पर 0.5 प्रतिशत जिंक सल्फेट + 2.0 प्रतिशत यूरिया का घोल बनाकर पानी के साथ खड़ी फसल में छिड़काव करना चाहिए।



सीडड्रिल द्वारा धान की सीधी बुवाई।